ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 25 कुल पृष्ठ-8 4 से 10 अप्रैल, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 चै.कृ.-15

आर्य समाज माडल बस्ती (शीदीपुरा), नई दिल्ली का हीरक जयन्ती समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के हुए प्रभावशाली प्रवचन

आर्य समाज माडल बस्ती (शीदीपुरा), नई दिल्ली का 75वां वार्षिकोत्सव एवं हीरक जयन्ती समारोह गत् 28 मार्च से 31 मार्च, 2019 तक आयोजित किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रभावशाली प्रवचनों से आर्यजन अत्यन्त उत्साहित हुए। इस अवसर पर आयोजित मानव कल्याण महायज्ञ में प्रतिष्ठित यजमानों ने भाग लेकर अपनी आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ का दायित्व आर्य समाज के धर्माचार्य श्री जय प्रकाश शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। इसमें वेदपाठ कन्या गुरुकुल शिवगंज की *स्नातिकाओं कु. बृजेशा एवं कु. सुनीता ने किया। कार्यक्रम का* मुख्य संयोजन आर्य समाज के मंत्री श्री आदर्श कुमार ने संभाला तथा उनके साथ आर्य समाज के प्रधान श्री आलोक शर्मा, उपप्रधान श्री नरेन्द्र जग्गी, कोषाध्यक्ष श्री प्रेम कुमार, विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री वेद प्रकाश गोगिया, श्री जगदीश कुमार, श्री प्रदीप गोगिया आदि ने कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया। श्री विवेक आर्य ने सोशल मीडिया पर कार्यक्रम को प्रचारित एवं प्रसारित करने में तथा विद्वानों के अतिथि सत्कार में विशेष दायित्व निभाया। प्रातः यज्ञ के उपरान्त नियमित रूप से बम्बई से पधारे श्री सत्येन्द्र आर्य के भजन तथा स्वामी आर्यवेश जी का प्रवचन चलता रहा जिसमें आर्य समाज माडल बस्ती के अतिरिक्त आर्य समाज देवनगर, आर्य समाज डोरीवालान, आर्य समाज करोलबाग, आर्य समाज बिरला लाइन्स, आर्य समाज जे.जे. कालोनी आदि के सदस्यों ने भी उत्साह के साथ भाग लिया। इसी प्रकार प्रतिदिन सायं 7 से 9 बजे तक भजनों एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चलता रहा।

स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक सिद्धान्तों पर व्यवहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। उनके तर्कपूर्ण एवं सरल व्याख्यानों को सभी ने अत्यन्त पसन्द किया। प्रतिदिन शाम के कार्यक्रम में उपस्थिति प्रभावशाली रही। 31 मार्च, 2019 को यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने पंचमहायज्ञ करने का संकल्प दिलवाते हुए सभी यजमानों एवं याज्ञिक परिवारों को आशीर्वाद दिया। स्वामी जी की प्रेरणा से सैकड़ों लोगों ने अपने व्यसन एवं दुर्गुण छोड़ने का व्रत लेकर आर्य समाज से जुड़ने का संकल्प लिया। समापन सत्र में मुख्यरूप से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री धर्मपाल आर्य, उत्तर दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री ओम सपरा, आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री, आर्य समाज करोलबाग के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा, आर्य समाज डोरीवालान के प्रधान श्री वागीश शर्मा, आर्य समाज देवनगर के प्रधान श्री सुशील बाली एवं मंत्री श्री रमेश वेदी, श्री संतोष कुमार शास्त्री, श्री जीवनलाल आर्य, श्री सतीश बिज, श्री विनोद गुप्ता प्रधान आर्य समाज सैनिक विहार, श्री कंवर पाल शास्त्री आर्य समाज बिरला लाइन्स, श्री सुधीर घई आर्य समाज बिरला लाइंस आदि ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

समापन सत्र में तुष्टिकरण की नीति देश के लिए घातक है विषय पर आयोजित विशेष संगोष्ठी में श्री कीर्ति शर्मा ने अध्यक्षता की तथा स्थानीय विधायक सर्वश्री विशेष रवि, राजेश लावडिया (उप महापौर, दि.न. नि.) आदि पधारे। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान सभी ने पसन्द किया।

हीरक जयन्ती समारोह में आर्य समाज के प्रधान श्री आलोक शर्मा के नेतृत्व में सर्वश्री नरेन्द्र कुमार जग्गी, श्री प्रेम कुमार, श्री जगदीश कुमार, श्री वेद प्रकाश गोगिया, श्री प्रदीप गोगिया, श्रीमती आशा शर्मा उपप्रबन्धक, श्रीमती रितु रूस्तगी प्रधानाचार्या, श्रीमती मधु जग्गी आदि ने अथक परिश्रम करके हीरक जयन्ती समारोह को सफल बनाया। समाज के मंत्री श्री आदर्श कुमार ने बड़ी कुशलता के साथ समारोह का संयोजन किया और श्री जय प्रकाश शास्त्री ने यज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों की व्यवस्था को संभाला। इस अवसर पर श्री रविदत्त दीवान, श्री विनोद गुप्ता, श्री जीवनलाल आर्य आदि का सम्मान भी किया गया। स्वामी आर्यवेश जी एवं आर्य भजनोपेदशक श्री सत्येन्द्र आर्य का भी शॉल, श्रीफल देकर सम्मान किया गया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज स्थापना दिवस पर विशेष

विभिन्न विषयों पर आर्य समाज का दृष्टिकोण

– प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार

19वीं सदी के उद्भट् तार्किक, महान समाज सुधारक, वेदज्ञ विद्वान, क्रांति वक्ता योगी महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जी ने बम्बई महानगर में 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की। अपने जन्मकाल से ही आर्य समाज ने समाज में परिव्याप्त धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक एवं आर्थिक शोषण के विरुद्ध वेबाक टिप्पणियाँ करते हुए इनके खिलाफ असरदार जनान्दोलन किए। ऐसी प्रवृत्तियाँ अन्तिम रूप में कभी खत्म नहीं होती। इन प्रवृत्तियों ने एक बार फिर संगठित होकर सभ्य और स्वस्थ समाज का स्वप्न लेने वाले भद्रजनों के समक्ष एक चुनौति खड़ी की है। सत्य के पक्षधर सभी व्यक्तियों को इस लेख के सवालों को लेकर शोषित जन सामान्य के बीच अवश्य जाना चाहिए। कोई भी तर्कहीन परम्परा समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा है। सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए यह आर्य समाज का मूल मंत्र है। विभिन्न विषयों पर आर्य समाज का दृष्टिकोण निम्नवत है।

– सम्पादक

ईश्वर :– ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, निर्विकार, सर्वव्यापक, अनुपम, सर्वाधार और सृष्टिकर्ता आदि गुणों से युक्त है। एक मात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

ईश्वर कभी किसी सूअर, कच्छप, मत्स या मनुष्य आदि का शरीर धारण कर अवतार नहीं लेता, इसलिए उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान पर कल्पित देवी–देवताओं एवं ऐतिहासिक महापुरुषों की मूर्तियों की पूजा वेद विरुद्ध है। मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करना, उन्हें खिलाना पिलाना, झूला झुलाना, पंखे झुलाना, धूप दीप दिखाना तथा सुलाना जगाना अन्धविश्वास एवं पाखण्ड है।

ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों तत्त्व अनादि है। शंकराचार्य का जीव ब्रह्ममैक्य का सिद्धान्त अयुक्त है। यदि हम ही ब्रह्म हैं तो उपासना किसकी? हमें अज्ञान और दुःख कहां से आया और दुःख में आश्रय किसका?

वेद :– वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद की समस्त शिक्षाएं व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं सृष्टि नियमों में साम्य रखती है। अतः वेद स्वतः प्रमाण हैं। संसार के सभी स्त्री पुरुषों को समान रूप से वेद पढ़ने पढ़ाने का अधिकार है। मध्यकालीन ग्रन्थों एवं परम्परा में स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन से वंचित करना हमारे इतिहास का कलंकित अध्याय है। आज भी कुछ शंकराचार्य एवं धर्माचार्य ऐसी आवाज रह रहकर उठाते हैं। उनको इसका माकूल जवाब दिया जाना चाहिए।

मध्यकालीन वेद भाष्यकारों उव्वट, महीधर और सायण आदि विद्वानों द्वारा वेद मन्त्रों का पशुहिंसा, श्राद्ध, अश्लीलता परक व्याख्यान तथा पाश्चात्य भाष्यकारों द्वारा वेद को गडरियों के गीत बताना एवं उनमें लौकिक इतिहास सिद्ध करना दुराग्रह मात्र है, यथार्थ नहीं।

प्रामाणिक साहित्य :– वेद के उपदेशों से साम्य रखने वाले उपनिषद्, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ, स्मृतिग्रन्थ एवं सूत्र साहित्य आर्ष ग्रन्थ हैं। जबकि अतर्कसंगत, अवैज्ञानिक, अश्लील एवं सृष्टिनियमों के नितान्त प्रतिकूल मान्यताओं का व्याख्यान करने वाले पुराण अनार्ष ग्रन्थ हैं। तमाम रूढ़िवादी मान्यताओं के पोषक यही पुराण है।

पंच महायज्ञ :– प्रत्येक ग्रहस्थ को यथासम्भव प्रतिदिन निम्न पांच यज्ञ करने चाहिए। ब्रह्मयज्ञ अर्थात् निराकार ईश्वर के गुणों का ध्यान करते हुए आत्मालोचन।

देवयज्ञ अर्थात देवपूजा, संगतिकरण एवं दान (हवन)।

पितृयज्ञ अर्थात् माता, पिता, आचार्यों के ऋण से उऋण होना।

अतिथि यज्ञ अर्थात् सदाचारी व परोपकारी जनों का सम्मान व सहयोग करना।

बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात् पशु पक्षियों का पालन पोषण।

गुरु और गुरुडम :– जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः गुरु के प्रति श्रद्धाभाव रखना उचित है। लेकिन गुरु को एक अलौकिक दिव्य शक्ति से युक्त मानकर उससे नामदान लेना, भगवान या भगवान का प्रतिनिधि मानकर उसकी या उसके चित्र की पूजा अर्चना करना, उसके दर्शन या गुरुनाम का संकीर्तन करने मात्र से सब दुःखों और पापों से मुक्ति मानना आदि गुरुडम की विष बेल है, अतः इसका परित्याग करना चाहिए।

चमत्कार :– दुनिया में चमत्कार कुछ भी नहीं है। हाथ घुमाकर चेन, लॉकेट बनाना एवं भभूति देकर रोगों को ठीक करने का दावा करने वाले क्या उसी चमत्कार से रेल का इंजन, बड़े–बड़े भवन बना सकते हैं? या कैंसर, हृदय तथा मस्तिष्क के रोगों को बिना आपरेशन ठीक कर सकते हैं? यदि वह ऐसा कर सकते हैं तो उन्होंने अपने आश्रमों में इन रोगों के उपचार के लिए बड़े–बड़े अस्पताल क्यों बना रखे हैं? वे अपनी चमत्कार विद्या से देश के करोड़ों अभावग्रस्त लोगों के दुःख दर्द क्यों दूर नहीं कर देते? असल में चमत्कार एक मदारीपना है जो धर्म की आड़ में धर्म भीरू जनता के शोषण का घटिया तरीका है।

धर्म :– धर्म वृत्तिमूलक आचरण परक है। दस वृत्तियों धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच (स्वच्छता), इन्द्रियनिग्रह, धी (विवेक युक्त बुद्धि), विद्या, सत्य एवं अक्रोध से युक्त जीवन ही धार्मिक जीवन है। केवल कर्मकाण्ड अर्थात् शंख, टल्ली, घंटे बजाना, व्रत उपवास करना, तिलक, कण्ठी धारण करना, माला जपना तथा पुण्य प्राप्ति के लिए तीर्थाटन करना आदि का धर्म से कुछ भी लेना–देना नहीं है।

तीर्थ :– ज्ञान का प्रचार–प्रसार करने वाले केन्द्र ही तीर्थ हैं। सूर्यग्रहण या किसी अन्य खास अवसर पर हरिद्वार, प्रयाग, काशी, कुरुक्षेत्र आदि में जाकर नदियों या सरोवर में स्नानादि से अथवा कावड़ ले आने भर से व्यक्ति पापकर्मों से छूट जायेगा या मुक्त हो जायेगा, ऐसा मानना घोर अज्ञान है।

कर्मफल :– किसी भी शुभाशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। किसी भी प्रकार का कर्मकाण्ड पापकर्मों के फल को परिवर्तित नहीं कर सकता। अतः इस भावना से किया या कराया जाने वाला सभी प्रकार का कर्मकाण्ड, अज्ञान, पाखण्ड एवं अधार्मिकता है।

श्राद्ध :– ईश्वरोपासना, स्वाध्याय एवं सदाचरण करते हुए जीवित माता–पिता, गुरुजनों एवं वृद्धजनों की सेवा करना ही श्राद्ध है। मृत पितरों के नाम पर ब्राह्मणों को भेजन करा दान दक्षिणा देना या स्थान विशेष पर जाकर पिण्डदान, गोदान आदि करना पण्डित जी को तो सुखी बना सकते हैं, पितरों को नहीं।

स्वर्ग–नरक :– स्वर्ग नरक कोई विशेष स्थान नहीं है। सुख विशेष का नाम स्वर्ग और दुःख विशेष का नाम नरक है और वे भी इसी संसार में शरीर के साथ ही भोगे जाते हैं। स्वर्ग नरक के सम्बन्ध में गढ़ी गई कहानियों का उद्देश्य केवल कुछ निष्कर्मण्य लोगों का भरण पोषण करना है।

मृतक कर्म :– मनुष्य की मौत के बाद उसके मृत शरीर का दाहकर्म करने के पश्चात् अन्य कोई करणीय कार्य नहीं रह जाता। आत्मा की शांति या उद्धार के लिए करवाया जाने वाला गरुड़पुराण आदि का पाठ या मन्त्रजाप इत्यादि धर्म की आड़ लेकर अधार्मिक लोगों द्वारा चलाया जाने वाला प्रायोजित पाखण्ड है।

पूजा का अर्थ :– जड़ पदार्थों का उचित रख–रखाव व सदुपयोग ही उनकी पूजा है। तुलसी और पीपल आदि के वृक्ष ज्वर आदि रोगों में लाभदायक हैं अतः इनकी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन इनकी परिक्रमा करके या सूत लपेटकर नमस्कार आदि करने में अपना कल्याण या पुण्य मानना अज्ञानता है पूजा नहीं।

भक्ति :– एकान्त में बैठकर भगवत् चिन्तन करते हुए उसकी दयालुता, न्यायकारी आदि गुणों को धारण कर त्यागमय जीवन जीने का नाम ही भक्ति है। लाखों के पण्डाल लगाकर फिल्मी धुनों पर स्त्री–पुरुषों को नचाना, झूम–झूमकर गाना, तालियां बजाकर कीर्तन करवाना बम्बईया फिल्मी भक्ति है अध्यात्म नहीं।

मुहूर्त :– जिस समय चित्त प्रसन्न हो तथा परिवार में सुख शांति हो वही शुभ मुहूर्त है। ग्रह नक्षत्रों की दशा देखकर पण्डितों से शादी ब्याह, कारोबार आदि के मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं है। दिनों का नामकरण हमारा किया हुआ है। भगवान का नहीं। अतः दिनों को हनुमान आदि के व्रतों एवं शनि आदि के साथ जोड़ना व्यर्थ है।

राशिफल एवं फलित ज्योतिष :– ग्रह नक्षत्र जड़ हैं और जड़ वस्तु का प्रभाव सभी पर एक सा पड़ता है अलग–अलग नहीं। अतः ग्रह नक्षत्र देखकर राशि निर्धारित करना एवं उन राशियों के आधार पर मनुष्य के विषय में भांति–भांति की भविष्यवाणियाँ करना नितान्त अवैज्ञानिक है। जन्मपत्री देखकर वर वधु का चयन करने की बजाए हमें गुण, कर्म, स्वभाव और चिकित्सीय परीक्षण के आधार पर रिश्ते तय करने चाहिए। जन्मपत्रियों का मिलान करके जिनके विवाह हुए हैं क्या वे दम्पत्ति पूर्णतः सुखी हैं? विचार करें राम–रावण व कृष्ण–कंस की राशि एक ही थी।

जादू टोने :– भूत–प्रेत, जादू–टोना, तागा–ताबीज, यन्त्र–मन्त्र, झाड़–फूंक यह सब दिन दहाड़े तथाकथित धार्मिकों द्वारा चलाया जाने वाला ठगी का कारोबार है। ज्योतिषियों की सलाह से अनिष्ट निवारण के लिए किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान भी इसी कारोबार का विस्तार है।

जाति बनाम वर्ण व्यवस्था :– आर्य समाज वर्ण व्यवस्था का समर्थक है। वर्ण व्यवस्था का आधार गुण, कर्म है। जबकि व्यवस्था जन्मगत है। वर्ण व्यवस्था में नीच कर्म करने वाला शूद्र और श्रेष्ठ कर्म करने वाला ब्राह्मण कहलाता है। कर्म ही व्यक्ति को श्रेष्ठ और पतित बनाते हैं। मनु महाराज के अनुसार जन्म से सभी शूद्र होते हैं।

नव संवत्सर पर इड़ा, मही, सरस्वती को नमन

नमन तुम्हें हे नव संवत्सर,
नमन तुम्हें हे आर्य समाज।
नमन तुम्हें हे भारत माता,
नमन तुम्हें हे प्रिय ऋषिराज।।
नव संवत् की चैत्र प्रतिपदा,
आर्य समाज बनाया था।
गहन नींद से जगाकर ऋषि ने,
सत्य का बोध कराया था।।
पीकर विष पत्थर खा खाकर,
पुनः किया हमको आगाह।।
नमन तुम्हें हे.....
थे हम आर्य यहीं के वासी,
आर्य संस्कृति थी अपनी।
विश्व गुरु था देश हमारा,
वैदिक संस्कृति जग जननी।
आओ हम संकल्प सभी लें ,
सफल करें ऋषि की आवाज।।
नमन तुम्हें हे.....
घर घर जाकर यज्ञ रचाकर,
हर घर को महकाना है।
निज संस्कृति से अपने बच्चों,
को संस्कार दिलाना है।
आर्यावर्त बनेगा फिर से,
विमल वेद सिर धारें ताज।।
नमन तुम्हें हे.....
बुझ न पाये ज्योति हमारी,
चिंतन हमको करना है।
आलस छोड़ें कमर कसें ,
माँ वंदन हमको करना है।
तन–मन–धन सब कर दें अर्पण,
अमरपुत्र बनकर के आज।।
नमन तुम्हें हे.....

पता : 329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–65

आर्य समाज स्थापना दिवस पर विशेष

आर्य समाज बुला रहा है

– पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

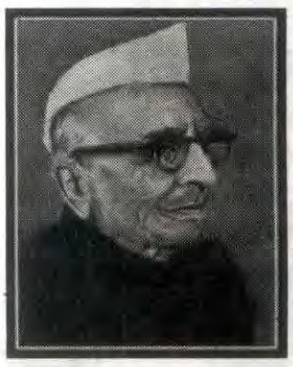

आर्य समाज आपकी प्यारी संस्था है जिसे स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 ई. (अर्थात् 1932 विक्रमी की चैत्र प्रतिपदा) में बम्बई में प्रारम्भ किया था। ऋषि के निधन के उपरान्त उनके उपदेशों से प्रभावित होकर हजारों आर्य समाज भारतवर्ष तथा अन्य देशों के ग्रामों या नगरों में खुल गये। इन सबके नियम और उद्देश्य एक ही हैं, और यह कई वैधानिक प्रणालियों द्वारा परस्पर संगठित तथा सहयुक्त हैं।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य यह था कि जगत् में ईश्वर के अस्तित्व, उसकी पूजा, जीव और ईश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य के आचार व्यवहार के विषय में जो अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं, उनको दूर किया जाये। स्वामी दयानन्द अपनी तपस्या, स्वाध्याय तथा मनन से इस निश्चय पर पहुंचे कि मनुष्य की सबसे प्राचीन और सर्वोत्तम धर्मपुस्तक वेद है। उसकी सहायता से अनेकानेक भ्रम दूर हो सकते हैं और उसी के अनुकूल चलने से देशों, जातियों, सम्प्रदायों के पारस्परिक झगड़े मिट सकते हैं। इसलिए स्वामी दयानन्द ने वेदों का प्रचार आरम्भ किया। आर्य समाज वैदिक धर्म का संसार भर में प्रचार करना अपना मुख्य कर्तव्य समझता है।

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

नियमों की व्याख्या

पहले दो नियमों में परमेश्वर के गुणों का वर्णन है। यों तो संसार में अधिकांश लोग ईश्वर, भगवान्, अल्लाह आदि अनेक नामों द्वारा ईश्वर को याद करते हैं, परन्तु ईश्वर के विषय में उनकी भावनाएं भिन्न-भिन्न हैं। कोई समझता है कि ईश्वर मनुष्य के समान मुंह, नाक, कान, हाथ, पैर युक्त शरीर वाला कोई ऐसा व्यक्ति है जो स्वर्ग में रहता और वहीं बैठा-बैठा संसार के प्राणियों पर शासन करता है। कुछ यह विश्वास करते हैं कि हम सब ईश्वर के हाथ के खिलौने हैं। वह जिस तरह चाहता है कठपुतली के समान हम को नचाता रहता है। किसी को राजा बनाता है, किसी को दरिद्र। किसी को नीरोग और किसी को रोगी। किसी को अन्धा और किसी को लंगड़ा।

कुछ लोग मानते हैं कि भूमि से ऊपर आकाश में किसी स्थान पर बहुत दूर स्वर्ग, बहिश्त या जन्नत है। वहाँ ईश्वर रहता है । उसके दरबार में बड़े-बड़े देवता या फरिश्ते रहते हैं। वह जैसी आज्ञा देता है, वे उसी प्रकार संसार के लोगों के साथ व्यवहार करते हैं।

कुछ लोगों का विचार है कि ईश्वर का वास्तविक घर तो स्वर्ग ही में है परन्तु ईश्वर जब चाहता है तो शरीर धारण कर के मर्त्यलोक में उतर

आता है। इसी को अवतार कहते हैं। अवतार लेकर ईश्वर नरलीला करता है। अर्थात् जैसा मनुष्य आचरण करते हैं, खाते हैं, पीते हैं, रोते हैं, हंसते हैं, लड़ते हैं, भिड़ते हैं, इसी प्रकार की लीलाएं ईश्वर भी किया करता है।

ईश्वर का यथार्थ स्वरूप समझने और ईश्वर पूजा की ठीक विधि का अवलम्बन करने से ही आपत्ति दूर होगी। अनुचित भोजन खाने से रोग होता है परन्तु इसका यह निदान नहीं है कि बिलकुल खाना बन्द कर दो, क्योंकि शरीर को ठीक रखने के लिए भोजन अत्यन्त आवश्यक है। त्याज्य है अनुचित भोजन। शुद्ध भोजन तो त्याज्य नहीं है। इसलिए यदि अनुचित भोजन से तंग आकर अनशन करना आरम्भ कर दिया जाये तो शरीर कैसे चलेगा?मनुष्य की आन्तरिक भावना है कि वह मनुष्य से भी बड़ी किसी सत्ता पर विश्वास करके उसका आश्रय ले और उसकी पूजा करे। यदि उसको ठीक-ठीक यह न बताया जाये कि वह सत्ता है क्या?तो वह भूत और चुड़ैलों को पूजने लगेगा। जिसे खाने के लिए रोटी नहीं मिलती वह वृक्षों की छाल तक खा जाता है। और अत्यन्त आपत्तिजनक अवस्थाओं में धूल तक फांकने लगता है। यही दशा आध्यात्मिक भोजन की है। अच्छा और उचित भोजन न दोगे तो अनुचित भोजन खाने पर लोग बाध्य होंगे। यही कारण है कि जब उचित ईश्वरवाद से मुंह मोड़कर लोग नास्तिक बन गये तो नास्तिकों में भी भूत प्रेत या कल्पित वस्तुओं और कब्रों की पूजा आरम्भ हो गई।

इस प्रकार ईश्वर को मानने वालों में इतने भेद प्रभेद हैं कि उनके विचार आपस में मेल नहीं खाते। जब एक ईश्वरवादी समुदाय दूसरे ईश्वरवादियों से निरन्तर लड़ता रहता है तो इससे संसार की शांति भंग होती है। ईसाई मुसलमानों से, मुसलमान यहूदियों से, हिन्दू मुसलमानों से, मुसलमान हिन्दुओं से, सदा लड़ते रहते हैं। सुन्नी मुसलमान शिया मुसलमान से लड़ता है, कैथोलिक ईसाई, प्रोटेस्टेण्ट ईसाई से लड़ता है। शैव हिन्दू शाक्त हिन्दू से लड़ता है। एक दूसरे के रक्त के प्यासे रहते हैं।

कुछ बुद्धिमान लोगों ने ईश्वरवादियों को परस्पर लड़ते देखकर ऐसा मत बना डाला कि ईश्वर कोई वास्तविक वस्तु नहीं हैं। मूर्खों ने इसकी कल्पना मात्र कर ली है और उसी कल्पना के आधार पर परस्पर लड़ते रहते हैं – न कोई ईश्वर है और न मनुष्य को किसी ईश्वर को पूजने की आवश्यकता है। इसलिए सब मनुष्य एक दूसरे के साथ मिलकर संसार की उन्नति करें, और धर्म का विचार छोड़ दें।

परन्तु ईश्वर विश्वास को छोड़ देने पर भी परिस्थिति सुधरी नहीं। बौद्धों ने ईश्वर अस्तित्व का तो निषेध किया, पर वही लोग महात्मा बुद्ध की मूर्तियां बनाकर पूजने लगे और उन मूर्तियों के आकार प्रकार पर लड़ाइयां होती रहीं। जैनियों ने भी ईश्वर के मानने से इन्कार कर दिया। किन्तु उन्होंने भी सन्त महात्माओं की मूर्तियां बनाई तथा शैव और शाक्त लोगों के समान मूर्तियों को पूजने लगे। बीमारी ज्यों की त्यों रही। केवल ऊपरी रूप बदल गया। कुछ नास्तिकों ने सब प्रकार के पूजापाठ छोड़ दिये। कहने लगे कि लोगों ने भ्रांतिवश अपनी कल्पना से ईश्वर-ईश्वर कहना आरम्भ कर दिया है वस्तुतः ईश्वर जैसी कोई सत्ता नहीं है। ईश्वर की पूजा में व्यर्थ धन या समय गंवाना ठीक नहीं है। प्राकृतिक सुखों के सम्पादन का प्रयत्न करना चाहिए, जेसा कम्युनिस्ट लोग किया करते हैं।

परन्तु अब तो संसार इस परीक्षण को भी कर चुका है। ईश्वर को छोड़ देने पर भी शान्ति नहीं मिली। आगे बढ़कर जैन समुदाय पीछे लौटा। मनुष्य का जी नहीं चाहता कि ईश्वर की सत्ता से सर्वथा इन्कार कर दे। यदि ईश्वर जैसी कोई वस्तु नहीं है तो यह जड़ जगत् सुव्यवस्थित कैसे रहता है?थोड़ा सा विचार करने से ही पता चलता है कि संसार मे कोई ऐसी शक्ति काम कर रही है जो मनुष्य की बुद्धि से भी परे है। जगत् की सभी वस्तुओं से अधिक बुद्धिमान् मनुष्य है परन्तु बुद्धिमान् मनुष्य की बुद्धि भी यह समझने में असमर्थ है कि स्वयं उसी का शरीर किस प्रकार कार्य कर रहा है?हमारी आंख कैसे बनी?कैसे उसमें देखने की शक्ति उत्पन्न हुई और कैसे वह काम करती हैं?मनुष्य आंख को स्वयं नहीं बनाता, चश्मे बनाने वाले चश्मे भी आंख का नमूना सामने रखकर ही बनाते हैं। और यह चश्मे भी बिना आंख के काम नहीं कर सकते। यदि चश्मा बनाने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है तो आंख बनाने के लिए कितनी बड़ी बुद्धि वाली शक्ति चाहिए। चींटी की आंख में देखने की शक्ति होती है। चींटी या चींटी के मां बाप तो आंख नहीं बना सकते। मनुष्य के मां-बाप भी अपने पुत्र की आंख की बनावट को न समझ सके हैं न आंख बना सकते हैं। इससे बुद्धिमान लोग इस सरलतम उपाय से कि ईश्वर का विश्वास ही छोड़ दें, सन्तुष्ट नहीं हो सके।

ईश्वर का स्वरूप और पूजा

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के पहले दो नियमों में यह दिखाया है कि केवल ईश्वर के न मानने मात्र से काम नहीं चलेगा। ईश्वर का यथार्थ स्वरूप शेष पृष्ठ 6 पर

सार्वदेशिक सभा की ओर से नववर्ष की मंगल कामना

नव वर्ष यानि सम्वत् 2076 का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 6 अप्रैल, 2019 को होगा। इसी दिन ऋषिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। सार्वदेशिक सभा परिवार नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्यजनों एवं पाठकों के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए सुख, समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

प्रिय पाठकों! इस शुभ दिवस पर महर्षि दयानन्द के ऋणों से अनृण होने का संकल्प लेते हुए आर्य समाज के पुनरोदय में सहभागी बनने का व्रत भी लें।

स्वामी आर्यवेश
सभा प्रधान

प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

बालोतरा, जिला-बाड़मेर, राजस्थान के आर्य सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र गहलोत की सेवानिवृत्ति पर

भव्य रामकथा एवं आर्य विचार संगोष्ठी का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य ने अध्यक्षता की

प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य ने बाल्मिकी रामयाण के वैदिक स्वरूप पर प्रकाश डाला

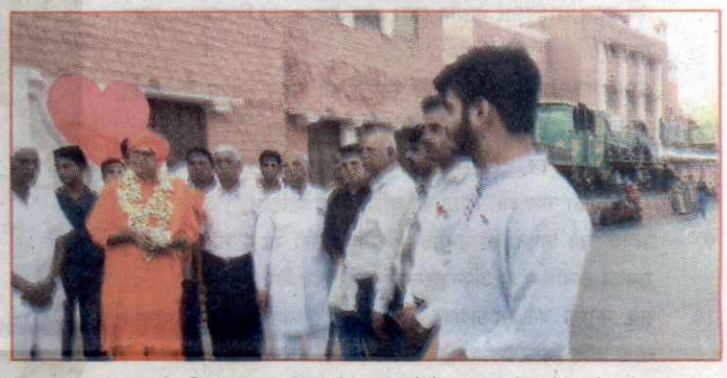

बालोतरा, जिला–बाड़मेर, राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र गहलोत के बैंक से सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में गत् 29 मार्च से 2 अप्रैल, 2019 तक भव्य रामकथा एवं 1 अप्रैल को मध्यान्ह आर्य विचार संगोष्ठी का आयोजन माली समाज, धर्मशाला, बालोतरा, जिला–बाड़मेर, राजस्थान में किया गया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के जीवन एवं बाल्मिकी रामायण के वैदिक स्वरूप को आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य ने प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। उनकी प्रस्तुति से बालोतरा नगर में उनका जबरदस्त प्रभाव पड़ा। 1 अप्रैल, 2019 को मध्यान्ह आर्य विचार संगोष्ठी का विशेष आयोजन सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री और राजस्थान के आर्यनेता श्री राम सिंह आर्य की अध्यक्षता में किया गया था। विश्व पटल पर सांस्कृतिक एवं मानवीय मूल्यों के पतन विषय पर आयोजित इस संगोष्ठी में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किये गये थे। स्वामी आर्यवेश जी 31 मार्च, 2019 को दिल्ली से चलकर 1 अप्रैल को प्रातः 7.30 बजे जोधपुर पहुंचे, उनके साथ श्री धर्मेन्द्र आर्य भी जोधपुर गये थे। जोधपुर रेलवे स्टेशन पर श्री रामसिंह आर्य जी के नेतृत्व में श्री नारायण सिंह आर्य, श्री मदन जी, श्री भंवरलाल आर्य, श्री चांदमल आर्य, श्री हरी सिंह आर्य, श्री भंवर लाल हठवाल, श्री महेश्वर चौधरी, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री उम्मेद सिंह आर्य आदि आर्य वीरदल के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी का स्वागत किया। 10 बजे पत्रकार वार्ता करके स्वामी आर्यवेश जी तथा श्री राम सिंह आर्य अपने अन्य वरिष्ठ सहयोगियों के साथ बालोतरा के लिए निकल पड़े और लगभग 2 बजे ये सभी बालोतरा पहुंचे, जहाँ बालोतरा प्रवेशद्वार पर ही आर्य समाज बालोतरा के पदाधिकारियों ने आर्य नेताओं का स्वागत किया। शाम को 4 बजे संगोष्ठी में श्री राम सिंह आर्य तथा स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ जिसे उपस्थित श्रोताओं की भीड़ ने एकाग्रचित्त होकर सुना।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मानव जीवन से नैतिकता, ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता, परोपकार एवं धार्मिकता आदि गुणों एवं मूल्यों के प्रति उदासीनता पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि वेद में कहा गया है 'मनुर्भव' किन्तु वर्तमान समय में सकल, सूरत और शरीर की रचना से दिखने वाले मनुष्य व्यवहार एवं गुणों की दृष्टि मनुष्यता से बहुत परे हैं। मनुष्य बनने के लिए व्यक्ति को कुछ मौलिक बातें अपने जीवन में अपनानी चाहिए। जिनमें मुख्यतया ईमानदारी, नैतिकता, परोपकार, समाजसेवा, देशभक्ति तथा परदुःखकातरता आदि गुण आवश्यक हैं। इन गुणों से रहित व्यक्ति मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है क्योंकि मनुष्य और पशुओं में अन्तर इन्हीं गुणों से है। ये गुण पशुओं में नहीं होते, क्योंकि उनके पास बुद्धि और विवेक नहीं है। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि पूरे विश्व के स्तर पर मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है और अश्लीलता, नग्नता, फूहड़पन आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मुख्य रूप

शेष पृष्ठ 5 पर

श्री बाबूलाल आर्य के सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में आर्य सम्मेलन का आयोजन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दी शुभकामनाएँ

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बाबू लाल आर्य ने अपने निवास ग्राम–जूई, जिला–भिवानी पर बैंक से सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में आर्य सम्मेलन एवं प्रीतिभोज का शानदार आयोजन किया। 31 मार्च, 2019 को उनके निवास पर प्रातः यज्ञ, प्रीतिभोज एवं आर्य सम्मेलन आयोजित हुआ। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वयं पहुँचकर श्री बाबूलाल आर्य को शुभकामना दी।

आर्य सम्मेलन में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य के जीवन में कभी भी कार्य से मुक्ति नहीं मिलती। हमें सदैव कर्म करते हुए 100 वर्ष तक जीने की इच्छा रखनी चाहिए। श्री बाबूलाल आर्य भले ही बैंक की नौकरी से सेवानिवृत्त हो गये हैं किन्तु उन्हें अब और अधिक जिम्मेदारी के साथ सामाजिक कार्यों में जुट जाना चाहिए। श्री बाबूलाल आर्य एक संघर्षशील, कर्मठ एवं निष्ठावान कार्यकर्ता हैं और आर्य समाज के कार्य में ये सदैव समर्पित भाव से जुटे रहते हैं। इन्होंने अपने गांव में शराब के ठेके के खिलाफ संघर्ष करके उसे हटाने का कार्य किया था। भविष्य में भी हम आशा रखते हैं कि ये आर्य समाज के कार्य को और तीव्र गति से आगे बढ़ायेंगे। स्वामी जी के अतिरिक्त स्वामी रामवेश जी, श्री इन्दर सिंह आर्य सेवानिवृत्त एस.डी.एम., बहन प्रवेश एवं बहन पूमन आर्या, बहन निर्मला ब्रह्मकुमारी, आचार्य हरपाल वर्चस्पति, श्रीमती सुनीति आर्या, श्री सहदेव बेधड़क, पं. रामरख आर्य, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह तेवतिया आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इनके अतिरिक्त प्रिं. ओम प्रकाश शास्त्री, पत्रकार श्री

सुनील लाम्बा, श्री पवन शर्मा एवं श्री प्रवीण शर्मा, श्री अजीत सिंह शास्त्री आदि ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आर्य सम्मेलन का मंच संचालन श्री कुलदीप आर्य ने किया। श्री बाबूलाल आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री बाबूलाल आर्य के सुपुत्र श्री कर्मपाल एवं श्री सत्यपाल आर्य, श्री मुकेश कुमार, श्री रणसिंह लाम्बा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वीरमती आर्या आदि ने अतिथि सत्कार में अपने सहयोगियों के साथ मनोयोग से कार्य किया तथा आगन्तुक अतिथियों को सम्मान दिया।

पृष्ठ 4 का शेष

बालोतरा, जिला–बाड़मेर, राजस्थान के आर्य सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र गहलोत की सेवानिवृत्ति पर

से परोसे जाते हैं। जिन्हें हम सांस्कृतिक कहते हैं ये सांस्कृतिक कार्यक्रम न होकर अपसंस्कृति का प्रदर्शन है। स्वामी आर्यवेश जी का प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली रहा और लोगों ने अनेक प्रश्नों के द्वारा शंकायें प्रस्तुत करके और जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा व्यक्त की।

2 अप्रैल को प्रातः 8 से 11 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रिय शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुई। इस अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री नरेश दत्त आर्य के भजन तथा आचार्य वेदप्रिय शास्त्री एवं स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचन हुए। यज्ञ के उपरान्त बालोतरा के निकट पचपदरा नगर में स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अर्चना सिंह ने स्वामी आर्यवेश जी का स्मृति चिन्ह एवं शॉल के द्वारा विद्यालय की ओर से स्वागत किया। मध्यान्ह 2 से 5 बजे के बीच रामकथा के समापन अवसर पर पुनः स्वामी आर्यवेश जी का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ तथा श्री कुलदीप आर्य ने रामकथा का भावपूर्ण तरीके से समापन किया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं पं. नरेश दत्त आर्य का सम्मान किया गया। उसके पश्चात् सर्वश्री रामसिंह आर्य, श्री कुलदीप आर्य, पूर्व मंत्री श्रीमती मदन कौर, बालोतरा नगर परिषद् के अध्यक्ष श्री खत्री आदि का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। अन्त में इस पूरे आयोजन के सूत्रधार एवं जिनके सेवानिवृत्त होने पर ये सम्पूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुआ था। श्री राजेन्द्र सिंह गहलोत का दूर–दूर से आये उनके शुभचिन्तकों ने शॉल, पगड़ी देकर सम्मानित किया। उनका सम्मान करने वालों में जालौर से पधारे श्री दलपत सिंह आर्य, श्री विनोद कुमार आर्य, श्री शिवदत्त आर्य, श्री प्रशान्त सिंह आर्य, शिवगंज से पधारे श्री हरदेव सिंह आर्य, जोधपुर से पधारे आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री भंवर सिंह आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री भंवरलाल हठवाल, पाली से पधारे श्री धनजी आर्य तथा उनके अन्य साथी और स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री सवाई सिंह आर्य, उपप्रधान श्री दिलीप सिंह आर्य, मंत्री श्री जितेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्री मांगीलाल पंवार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री राजेन्द्र गहलोत के भाई श्री मोहन लाल गहलोत ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रीतिभोज की भी समुचित व्यवस्था की गई थी जिसमें सभी लोगों ने भाग लिया। उपस्थित जनसमूह ने श्री राजेन्द्र गहलोत से समाजसेवा में कृत–संकल्प होने की आशा के साथ ढेर सारी शुभकामनाएं समर्पित की। कार्यक्रम बड़े उत्साह एवं उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ–3 का शेष

आर्य समाज बुला रहा है

समझने और ईश्वर पूजा की ठीक विधि का अवलम्बन करने से ही आपत्ति दूर होगी। अनुचित भोजन खाने से रोग होता है परन्तु इसका यह निदान नहीं है कि बिलकुल खाना बन्द कर दो, क्योंकि शरीर को ठीक रखने के लिए भोजन अत्यन्त आवश्यक है। त्याज्य है अनुचित भोजन। शुद्ध भोजन तो त्याज्य नहीं है। इसलिए यदि अनुचित भोजन से तंग आकर अनशन करना आरम्भ कर दिया जाये तो शरीर कैसे चलेगा?मनुष्य की आन्तरिक भावना है कि वह मनुष्य से भी बड़ी किसी सत्ता पर विश्वास करके उसका आश्रय ले और उसकी पूजा करे। यदि उसको ठीक-ठीक यह न बताया जाये कि वह सत्ता है क्या?तो वह भूत और चुड़ैलों को पूजने लगेगा। जिसे खाने के लिए रोटी नहीं मिलती वह वृक्षों की छाल तक खा जाता है। और अत्यन्त आपत्तिजनक अवस्थाओं में धूल तक फांकने लगता है। यही दशा आध्यात्मिक भोजन की है। अच्छा और उचित भोजन न दोगे तो अनुचित भोजन खाने पर लोग बाध्य होंगे। यही कारण है कि जब उचित ईश्वरवाद से मुंह मोड़कर लोग नास्तिक बन गये तो नास्तिकों में भी भूत प्रेत या कल्पित वस्तुओं और कब्रों की पूजा आरम्भ हो गई। इसलिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के पहले दो नियमों में ईश्वर के ठीक-ठीक स्वरूप का वर्णन किया।

इस प्रकार हम इस परिणाम पर पहुंचे –

(1) ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जो सारे जगत् का आदि मूल है।

(2) जगत मिथ्या नहीं है। यदि जगत मिथ्या होता तो आदिमूल भी मिथ्या होता। उपनिषद् कहती है – ''कथं असत: सत् जायेत्'' अर्थात् कैसे असत् से सत् उत्पन्न हो सकता है। और सत् से असत् उत्पन्न नहीं हो सकता। 'नाभावो विद्यते सत:' यह गीता का वाक्य है

(3) उस ''आदिमूल'' सत्ता के गुणों का दूसरे नियम में वर्णन है, अर्थात् वह सच्चिदानन्द है। एक रस है। प्राकृतिक नहीं है, निराकार है। क्योंकि रूप रंग आदि आकार तो भौतिक हैं। भौतिक चीजें अनित्य होती हैं। ईश्वर अनित्य नहीं, अनित्य तो जगत् है। ईश्वर अवतार भी नहीं लेता। कोई जड़ पदार्थ ईश्वर का स्थानापन्न नहीं बन सकते।

(4) इसलिए सब प्रकार की मूर्तियां जो ईश्वर के स्थान में पूजी जाती हैं कल्पित और भ्रमात्मक हैं। वे आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वथा अनुचित और हानिकारक हैं। सब प्रकार की मूर्तिपूजा को बन्द कर देना चाहिए। जितनी मूर्तियां पशु पक्षियों के आकार की जैसे शेषनाग की या नर-पशु की मिली हुई जैसे गणेश या नरसिंह की या पीपल, वट आदि वृक्षों की या राम, कृष्ण, विट्ठल या मरियम आदि की हैं सभी पूजना पाप हैं। मरे हुए महात्माओं की कब्रों की पूजा पत्थर की मूर्तियों के पूजने के समान ही अनुचित है। यह वस्तुत: ईश्वर पूजा ही नहीं।

(5) ईश्वर की पूजा एक आध्यात्मिक कर्म है। अर्थात् अपने अन्त:करण में उस सत्ता पर विचार करना जिसकी व्यवस्था में यह जगत् चल रहा है। हाथ जोड़ना, सिर को नमाना, सिजदा करना, दण्डवत् करना, फूल या जल चढ़ाना यह सब ईश्वरपूजा की भ्रमात्मक रीतियां हैं।

(6) भिन्न-भिन्न अवतार मानने वालों ने जब अलग-अलग अवतार, अलग-अलग पैगम्बर या अलग-अलग सन्त माने तो पूज्य पदार्थों की भिन्नता के कारण पूजकों के भी अनेक सम्प्रदाय बन गये। मन्दिरों और मस्जिदों पर झगड़े हुए। ईसा की जेरूसलम की कब्र को हथियाने के लिए ईसाइयों और मुसलमानों में जो सलीब के युद्ध हुए वह कई शताब्दियों तक मानव संहार करते और कराते रहे। यदि मनुष्य बुत परस्ती, कब्र परस्ती, मर्दम परस्ती छोड़ कर उस विशाल सत्ता का ध्यान करता जो प्रत्येक देश और प्रत्येक काल में हमारे दिलों में विद्यमान रहती है तो अवश्य ही धर्म के माथे पर मानव संहार के कलंक का टीका न लगता।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है कि मनुष्य मात्र के हृदय में सच्ची आस्तिकता की शुद्ध भावना उपजे।

वेदों की महत्ता

तीसरे नियम में 'वेद' के पढ़ने और पढ़ाने, सुनने और सुनाने, मानने और मनवाने का संकेत है। वेद न केवल मनुष्य जाति की प्राचीनतम पुस्तक है। अपितु उसमें मनुष्य की लौकिक और पारलौकिक उन्नति के ऐसे नियम दिये हैं कि हम सैकड़ों बुराइयों से बच सकते हैं। मनुष्य समाज के निर्माण और सांसारिक जीवन व्यतीत करने के जो नियम वेद में दिये हैं वैसे किसी भी पुस्तक में पाये नहीं जाते। यों तो संसार में भिन्न-भिन्न देशों और भिन्न-भिन्न युगों में अनेक महात्मा सुधारक हुए जिन्होंने मनुष्य को गलत रास्ते से बचाया। परन्तु उनके सुधार एकांगी थे। सुधार के साथ-साथ उनसे बिगाड़ भी हुआ है। जैसे कुछ अत्याचारियों के आक्रमण से बचने के लिए हिन्दुओं ने बाल-विवाह की प्रथा जारी की परन्तु जब यह प्रथा चल पड़ी तो इसने देश और जाति को कमजोर बना दिया। इसी प्रकार जब मुसलमानों ने मूर्तिपूजा का विरोध किया तो मस्जिदों से मूर्तियां निकाल दी गईं, परन्तु जैसे मूर्तिपूजक मूर्तियों के समक्ष साष्टांग दण्डवत् किया करते थे उसी प्रकार मुसलमानों का सिजदा जारी रहा। जैसे हिन्दू काली माई के समक्ष बकरे चढ़ाते हैं उसी प्रकार मुसलमान लोग भी बकरे, गाय या ऊंटनी की कुर्बानी करते हैं मानो जन्नत (स्वर्ग) में बैठा हुआ ईश्वर प्रसन्न होगा अन्यथा कुर्बानी का कोई अर्थ नहीं। जब एक हिन्दू काली माई पर बकरा चढ़ाता है तो वह एक ऐसी निर्दयी स्त्री की कल्पना करता है जो पशुओं को मार कर खाती होगी परन्तु मुसलमानों के अल्लाह के लिए तो वह ऐसा नहीं मानते कि अल्लाह पहले कभी पशुओं को मार कर खाया करता होगा। वस्तुत: एकांगी सुधार वास्तविक सुधार नहीं। इस प्रकार के आध्यात्मिक रोग उस समय तक दूर न होंगे जब तक वेदों का प्रचार न हो, धर्म का मौलिक सुधार न किया जाये। आर्य समाज का यह मुख्य उद्देश्य है। जैसे सूर्योदय होने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के दीपकों के झगड़े मिट जाते हैं। इसी प्रकार जब वेदों का प्रचार हो जायेगा तो आधुनिक धर्मशास्त्रों के पारस्परिक झगड़े भी मिट जायेंगे। रात के अन्धकार में दीपकों के होते हुए भी वस्तुओं की आकृति में कुछ थोड़ा सा भेद प्रतीत हुआ करता है। सूर्य के प्रकाश में वह भ्रांति दूर हो जाती है। धार्मिक पुस्तकों पर आजकल लोगों का अवलम्बन है जैसे मुसलमानों का कुरान, ईसाइयों की बाइबिल, ये सब पुस्तकें इनके लिखने वालों ने अपने समय की कुछ विपत्तियों को दृष्टि में रखकर लिखी थीं। जिनमें उन-उन देशों या उन-उन समयों की दुर्घटनाओं की ओर संकेत था। अत: उनका क्षेत्र भी संकुचित था। वे हर समय अथवा हर युग के लिए उपयुक्त न थीं। वेदों में जिस धर्म का प्रतिपादन है वह सभी देशों और सभी कालों में सत्य ठहरता है। इसी को सत्य या सनातन कहते हैं। हर देश और हर समय के लोग इसका अनुसरण कर सकते हैं। इसलिए आर्य समाज वेदों के पठन, पाठन और श्रवण को हर एक का कर्त्तव्य बताता है।

विश्व बन्धुत्व का पाठ

शेष सात नियम मनुष्यों के साधारण सदाचार तथा व्यवहार से सम्बन्ध रखते हैं। सबसे पहली बात यह है कि आर्य समाज किसी देश विशेष, नगर विशेष, या प्रान्त विशेष के लिए नहीं है। संसार का उपकार करना इसका परम धर्म है। संसार में सब कुछ आ जाता है। जहां तक हमारी, हमारे ज्ञान की या हमारी शक्ति की पहुंच हो। आर्य समाज न केवल हिन्दुओं के सुधार के लिए हैं, न केवल मुसलमानों के, न केवल ईसाइयों के, आर्य समाज की सहानुभूति सबके साथ है। वह सबसे प्रेम करता है और जो कोई आर्य समाज के प्रेम का उत्तर प्रेम से देना चाहता है उसकी सहायता के लिए बिना भेदभाव के उद्यत है और सदा उद्यत रहना चाहिए। आर्य समाज के लिए सब मनुष्य मनुष्य हैं। वे सब बिना जाति, रंग, जन्म या लिंग भेद के आर्य समाज में प्रविष्ट हो सकते हैं। यदि उनकी समझ में आ जाये कि आर्य समाज के सिद्धान्त और मन्तव्य अच्छे और मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक हैं।

काले, गोरे, ऊँच नीच का प्रश्न नहीं

आर्य समाज के प्रवर्तक ने पहले तो इस बात पर बल दिया है कि जन्म, रंग या देश के अनुसार मनुष्य जाति में जो भेदभाव और परस्पर द्वेष फैला हुआ है वह वेदों की शिक्षा के सर्वथा विपरीत है। यह ठीक है कि सब मनुष्य एक से नहीं हैं। कोई मूर्ख है कोई विद्वान्, कोई सदाचारी है कोई दुराचारी, कोई क्रूर है कोई सहृदय परन्तु यह भेद गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार है न कि किसी जन्म विशेष या निवास स्थान विशेष के कारण हर देश में बुरे और भले दोनों रह सकते हैं। हर घर में अच्छे और बुरे उत्पन्न हो सकते हैं। सभी गोरे सहृदय नहीं होते, सभी काले निर्दय नहीं होते। सभी अफ्रीकन चोर नहीं हो सकते। सभी काशी के सत्य-निष्ठ नहीं हो सकते। सभी स्त्रियाँ कुलटा नहीं हो सकतीं और सभी पुरुष सदाचारी नहीं हो सकते। इसलिए आर्य समाज इस सिद्धान्त को नहीं मानता कि ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही होगा। या शूद्र का लड़का शूद्र ही होगा। ऋषि दयानन्द की इस शिक्षा ने हिन्दुओं के ऊपर तुरन्त ही प्रभाव डाला। क्योंकि आर्य समाज भारतवर्ष में हिन्दुओं के मध्य में उत्पन्न हुआ। हिन्दुओं में जन्मपरक भेदभाव की बीमारी बुरी तरह लगी थी। स्वयं हिन्दुओं के भीतर सैकड़ों उपजातियाँ ब्राह्मणों की, सैकड़ों क्षत्रियों की, सैकड़ों शूद्रों की, और सैकड़ों वैश्यों की विद्यमान थीं। सैकड़ों जातियाँ नीच और अछूत समझी जाती थीं जिनको ऊँच जाति वाले न छूते थे न पढ़ाते थे और न उभरने देते थे। हर जाति या उपजाति दूसरी जाति को पराया तथा नीच समझती थी। कुछ ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मणों को नीच समझते थे। उनके साथ रोटी बेटी का व्यवहार न था। आर्य समाज ने इस भेदभाव को मिटाने का प्रयत्न किया है और अधिकांश में सफलता मिली है। जो अन्य देशीय लोग हैं उनके साथ भी आर्य समाज समान व्यवहार का पक्षपाती है। किसी देश और किसी रंग के नर-नारी समाज में प्रविष्ट हो सकते हैं। और इसके कार्यक्रम को अपना कर अपना और मानव जाति का कल्याण कर सकते हैं। अन्य मत-मतान्तरों की भांति आर्य समाज यह नहीं मानता कि किसी धर्म विशेष के सम्बन्ध रखने मात्र से कोई मनुष्य अच्छा या बुरा, दुष्ट या श्रेष्ठ, सम्मानित या अपमानित हो सकता है। एक सदाचारी मुसलमान, दुराचारी आर्यसमाजी की अपेक्षा अधिक माननीय है। ईश्वर व्यवस्था में सब एक से हैं। इस प्रकार आर्य समाज विश्व बन्धुत्व का पक्षपाती है। वैदिक प्राचीन काल के आर्यों में यह भेदभाव नहीं था। आर्य समाज में यह भेदभाव न होना चाहिए। ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देना आर्य समाज का परम उद्देश्य है।

पशु-पक्षियों की रक्षा

आर्य समाज का कार्यक्षेत्र केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है। पशु-पक्षियों में भी हमारे समान आत्मा है। अत: वे भी हमारी दया के अधिकारी हैं। आर्य समाज अपने भोजन के लिए किसी पशु को मारना पाप समझता है। जिस प्रकार किसी मनुष्य का धन अपहरण करना पाप है, इसी प्रकार अपने खाने के लिए भेड़,बकरी, मुर्गी आदि का मारना भी पाप है। और अपने या अपने किसी सम्बन्धी के परलोक को सुधारने के लिए किसी पशु की यज्ञ में हत्या करना पाप है। आर्य समाज यत्न करता है कि संसार के सभ्य मनुष्य हर प्रकार की पशु-हत्या को छोड़ देवें। क्योंकि जैसे चोरी चोर की आत्मा को कलुषित कर देती है इस प्रकार, पशु-वध या पक्षी-वध या मनुष्य-वध है। इससे मारने वाले का आत्मा कलुषित हो जाता है। यदि कोई वर्ग विशेष इस प्रकार के पशु-वध को अपना व्यवसाय बना लेता है तो मानवता को छोड़कर उसमें दानवता के अवगुण आ जाते हैं। मनुष्य मनुष्य नहीं रहता, पशु बन जाता है।

अविद्या का नाश विद्या की वृद्धि

आर्य समाज अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए किसी क्रूर उपाय को करने के विरुद्ध है। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होनी चाहिए। आर्य समाज का विश्वास है कि जब विद्या का प्रकाश फैलेगा तो भ्रांतियाँ स्वयं दूर हो जायेंगी और लोग अपने धर्म को समझ कर उस पर आरूढ़ हो जायेंगे। इसलिए आर्य समाज अपने सिद्धान्तों को फैलाने में किसी लालच या धमकी या पाशविक बल का प्रयोग करना उचित नहीं समझता। आर्य समाज दम्भ, पन्थाईपन या गुरुडम का भी विरोधी है।

सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग

सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। यह आर्य समाज का एक नियम है। किसी की बुद्धि पर ताला डालना आर्य समाज के मन्तव्यों के विरुद्ध है। मनुष्य की बुद्धि ही मनुष्य का सबसे मूल्यवान् गुण है। ''बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।'' अत: मनुष्य को अपनी बुद्धि की खिड़कियाँ सदा खुली रखनी चाहिए। और हर एक काम धर्म और अधर्म उचित और अनुचित को विचार करके करना चाहिए।

व्यक्ति और समाज

आर्य समाज व्यक्तिगत विचार स्वातन्त्र्य की रक्षा करते हुए मनुष्य समाज के निर्माण के लिए समाज संगठन का आदर करता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसका विकास अलग-अलग रह कर नहीं हो सकता। एक दूसरे की सहायता चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हम दूसरों की मान्यताओं को भी आदर की दृष्टि से देखें और जहां आवश्यक हो समाज के कल्याण के लिए अपने कल्याण की उपेक्षा करें। आर्य समाज निर्बुद्धि भेड़ों का समूह नहीं है जो अपनी बुद्धि को काम में न लाकर किसी गडरिये के पीछे लग जाती है परन्तु आर्य समाज ऐसे उच्छृंखल व्यक्तियों का समूह भी नहीं है जिसमें दम्भ या अहंमन्यता हो और किसी अन्य की भावनाओं को सहिष्णुता की दृष्टि से न देख सकें।

वैयक्तिक उन्नति के साधन

वैयक्तिक उन्नति के लिए आर्य समाज पञ्चयज्ञ के कर्मकाण्ड पर विश्वास करता है। पञ्चयज्ञ ये हैं –

(1) ब्रह्मयज्ञ- परमात्मा की उपासना मन्त्रों द्वारा करना। ऋषि दयानन्द ने वेद मंत्रों को छांट कर सन्ध्या की विधि निर्धारित की है।

(2) देवयज्ञ – अग्नि प्रज्ज्वलित करके मन्त्रों द्वारा आहुति देना।

(3) भूतयज्ञ – जो नौकर, पशु आदि आपके आश्रित हैं उनके पालन पोषण का प्रबन्ध करना।

(4) पितृयज्ञ – जीवित माता पिता की सेवा करना और उनको आदर प्रदान करते हुए सब प्रकार से सुखी रखना।

(5) अतिथि यज्ञ – घर में आये हुए अतिथियों का सत्कार करना। ऋषि, मुनि, संन्यासी, परिव्राजक देश सेवी इसी कोटि में आते हैं।

सोलह संस्कार : आर्य समाज सोलह संस्कारों में विश्वास करता है जिनका वर्णन स्मृतियों और शास्त्रों में आया है। ये संस्कार इस प्रकार हैं – जन्म से पूर्व संस्कार (1) गर्भाधान, (2) पुंसवन, (3) सीमन्तोन्नन। जन्म के उपरान्त, (4) जातकर्म, (5) नामकरण, (6) निष्क्रमण, (7) अन्नप्राशन, (8) मुण्डन, (9) कर्णवेध, (10) उपनयन, (11) वेदारम्भ, (12) समावर्तन संस्कार, (13) विवाह संस्कार, (14) वानप्रस्थ, (15) संन्यास और अन्तिम, (16) अन्त्येष्टि संस्कार। इनकी विधि का संस्कारविधि में वर्णन किया गया है। पञ्चयज्ञ और संस्कार दोनों ही वैयक्तिक जीवन को उन्नत करने वाले हैं।

ये हैं संक्षेप और संकेत से आर्य समाज के उद्देश्य। आप सोचिये, विचारिये जांचिये और परखिये। यदि आपको भले प्रतीत हों तो आर्य समाज में प्रविष्ट होकर अपना सहयोग दीजिए। इसी प्रकार अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि हो सकेगी। तमसो मा ज्योतिर्गमय : हे परमपिता परमात्मा! आप अन्धकार से हम को प्रकाश में ले चलिये।

– गंगा ज्ञान सागर,

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा सम्पादित से साभार

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

उदर वायु एवं प्राकृतिक उपचार

- डॉ. मधु गुप्ता शास्त्री

गैस्ट्रिक, (गैस रोग) आध्मान, सभी पेट के ऐसे रोग हैं, जिससे प्राय: दिल्ली जैसे महानगरों में रहने वाला शायद ही कोई बचा हो। गैस के साथ अपचन व विबन्ध(कब्ज) का होना भी पाया जाता है।

पाचन क्रिया जिस अंग में होती है उसका पहला भाग मुख से आमाशय तक का भाग है इसमें गैस बनने अथवा रूकने का कोई स्थान नहीं है। इसके बाद आमाशय प्रारम्भ होता है जिसका सम्बन्ध शरीर के बाहरी वातावरण से आहारनाल के माध्यम से रहता है जिसमें वायु का रहना एक सामान्य बात है जिसके द्वारा पाचन सरल हो जाता है परन्तु जब वायु का दबाव अत्यधिक मात्रा में बनता है तब डकारों के माध्यम से वह बाहर निकल जाती है तथा थोड़ी वायु की मात्रा आंतों में भी आ जाती है। चिकित्सा का समुचित उपयोग न करने से अम्ल की मात्रा बढ़ जाती है और आमाशय आकार में भी बढ़ जाता है। गैस जब पेट में भ्रमण करती है तो दर्द व पेट में मरोड़ उत्पन्न होने लगता है। शरीर में भारीपन, सिर दर्द आदि लक्षण उत्पन्न होते हैं।

कारण - इसका प्रमुख कारण अपच व कोष्ठबद्धता (कब्ज) है परन्तु सामान्य जीवन में कभी-कभार कब्ज और अपच हो ही जाता है। परन्तु ऐसे में जो व्यक्ति अत्यधिक अम्लीय पदार्थ मैदा, चीनी, वनस्पति घी, तले-भुने पदार्थ, फास्ट फूड, पीजा, वर्गर, चाय, कॉफी आदि का प्रयोग करते हैं तथा कभी उपवास नहीं करते उनके अन्दर वायु सामान्य से अधिक होकर वायु रोग को उत्पन्न करती है। जल्दबाजी में और अधिक मात्रा में खाना भी गैस रोग का कारण हो सकता है।

लक्षण - इस रोग का प्रमुख लक्षण आमाशय छोटी आंत व बड़ी आंत में अत्यधिक वायु का बनना है। इसमें प्राय: आध्मान (पेट का फूलना) पाया जाता है। रोगी कष्ट का अनुभव करता है। मुख और मलद्वार से प्राय: सड़न भरी दुर्गन्धयुक्त वायु निकलती है। इसके अतिरिक्त निम्न लक्षण पाये जाते हैं -

* दुर्गन्धयुक्त श्वास-प्रश्वास का होना, थोड़ा चलने पर श्वास का फूलना भी पाया जाता है।
* भूख कम लगती है।
* जिह्वा मटमैली हो जाती है।
* गले व सीने में जलन होती है।
* सिर व कमर दर्द की शिकायत रहती है।
* रोगी का जी घबराता है और बेचैनी रहती है।
* रोग जीर्ण होने पर इसका कुप्रभाव पाचन संस्थान के अतिरिक्त हृदय, यकृत, फेफड़े, वृक्क (गुर्दे) पौरुष ग्रंथि (प्रोस्टेट ग्लैण्ड) व गर्भाशय पर पड़ता है।
* वायु विकार के कारण रक्त भी दूषित हो जाता है इसके कारण मस्तिष्क, नाड़ी तंत्र, आंख, कान व मांस-पेशियां भी प्रभावित होती हैं।
* अत्यधिक जीर्ण होने पर पेट एवं मलाशय की मांस पेशियां

शिथिल हो जाती हैं जिसके कारण स्थाई अपचन व विबन्ध रहने लगता है।

उपचार - पेट की वायु विकार में कब्ज एवं अपच का रहना तथा वायु कारक पदार्थों का सेवन मुख्य कारण होता है। अत: इनका परित्याग करके उपचार करना चाहिए। इसके लिए निम्न उपाय करें -

1. दिन में दो बार एनिमा द्वारा पेट की सफाई करें।
2. पेट पर मिट्टी की पट्टी दो बार गरम-ठंडा सेक करके लगायें।
3. दिन में एक बार गरम ठण्डा कटि स्नान करायें।
4. पेट व पूरे शरीर की मालिश कर स्टीम बाथ दें।
5. स्नान के बाद पेट की लपेट एक घंटे तक बांधें।
6. आंतों को विश्राम देने के लिए यथावश्यक उपवास करायें।
7. उपवास काल में केवल जल, नीबू पानी तथा कच्चे नारियल का पानी पिलायें।
8. यदि उपवास कराना संभव न हो तो सब्जियों का सूप, मीठे फल व फलों का रस आवश्यकतानुसार दो-तीन बार दें।

पथ्य आहार - रोगी को पेठे का रस, उबली हरी सब्जियों का सूप, कच्चे नारियल का पानी, मीठे फल का सेवन करायें। उबली सब्जी का सेवन अत्यधिक लाभप्रद रहेगा। रोग ठीक होने पर फुलका पुराना चावल आदि का प्रयोग करें।

अपथ्य आहार-विहार - वायुवर्धक सभी आहार-विहार वर्जित है यथा राजमा, सेम, लोबिया, अरहर, मूंग, आलू, कमलनाल, कद्दू, सरसों का शाक, जामुन का फल, लाल करौंदा, खट्टी नारंगी, खजूर, बेर, चना, मटर, फूलगोभी, मूली, तरबूज तथा सलाद अंकुरित अन्न तथा मद्य (शराब) चाय तथा कॉफी, कोला आदि।

विहार - प्रात: खुली व शुद्ध वायु में भ्रमण तथा योगासनों का अभ्यास अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार करें। योगासनों में पवनमुक्तासन, कटिचक्रासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, वज्रसान, उत्थितपादासन आदि का अभ्यास करायें। नाड़ी शोधन प्राणायाम, हल्की धूप का सेवन भी लाभप्रद है।

सूर्य नमस्कार, तीव्र गति वाले व्यायाम व तेज दौड़ना, सूर्य स्वर के द्वारा किया जाने वाला प्राणायाम, कुम्भक, भस्त्रिका प्राणायाम आदि। घुड़सवारी, क्षोमक वाहन का उपयोग लाभकर है। इसके अलावा अधाारणीय वेगों को न धारण करना आदि सभी उपाय करने से वायु जनित रोग ठीक हो जाते हैं। वायु रोगों में अनियमित खानपान से बचना प्रथम प्रयास होना चाहिए। मन से सदैव प्रसन्न रखते हुए ओ३म् नाम का नियमित रूप से जाप करें।

- सरल जीवन से साभार

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ कर्मचारी श्री विजय प्रकाश के अनुज श्री विनय प्रकाश जी का असामयिक देहावसान

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ कर्मचारी श्री विजय प्रकाश के अनुज तथा आर्य जगत की महान विभूति आचार्य राजेन्द्र शर्मा जी के छोटे सुपुत्र श्री विनय प्रकाश का दिनांक 29 मार्च, 2019 को असामयिक निधन हो गया। वे 57 वर्ष के थे। श्री विनय प्रकाश जी को कैंसर जैसी गम्भीर बीमारी ने जकड़ लिया था। अत्याधुनिक अस्पतालों में इलाज करवाने के बाद भी उनको बचाया नहीं जा सका। श्री विनय प्रकाश, *आर्य समाज शाहजहांपुर के कर्मठ कार्यकर्ता थे तथा* धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में निरन्तर संलग्न रहते थे। वे अपनी पत्नी ममता मिश्रा तथा दो सुपुत्र श्री पुनीत मिश्रा और हर्षित मिश्रा अपने पैरों पर खड़े हैं तथा सुख समृद्धि से भरपूर जीवनयापन कर रहे हैं। उनका अंतिम

संस्कार शाहजहाँपुर के श्मशान घाट पर दिनांक 30 मार्च, 2019 को पूर्ण वैदिक रीति से सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा और शान्ति यज्ञ दिनांक 3 अप्रैल, 2019 को किया गया। शांति यज्ञ में सैकड़ों गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री विनय प्रकाश जी के निधन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं समस्त सभा कर्मचारियों ने गहरा दु:ख व्यक्त किया और मौन श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति तथा पारिवारिक जनों को इस महान दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की।

Art Of Vedic Living

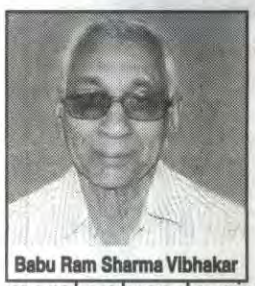

Babu Ram Sharma Vibhakar

Man is endowed with the spiritual science. He in his family has to serve and exercize some moral values to give a vent to the 'Art of Vedic Living' one who believes in the modes and techniqnes of Vedic style. He certainly follows some rules set up by nature and godly instructions and directions to go better on the path of Rishis and our forefathers who used to start their morning by performing prayer to God or parmatma or an unique energy. Then it was the duty of the family members to perform yajan or Agnihotra along with chanting mantras from the Vedas. But now-a-days the youngsters have no time to perform the yajan.

Now these practices are rare in cases excepting birth days or Grah Pravesh etc. Anyway the concept is clear that a family living with the vedic system as we had to observe in the past. But now due to the Arya Samajic Movements the rise (Jagarti) has taken place and so it accepted our belongings. We have begun to frame our vedic living style.

The future is bright we should welcome it heartily and a jest of Vedic style of living. And we should change our hobits of studying the books on Vedic religion which presents a light to our arguments for the betterment of our thoughts. If we sharpen our logic, we can never be cheated. We transform our entity under the influx of it and move according to the best of our knowledge and concept. A good book is always a good friend indeed.

- Babu Ram Sharma Vibhakar
Mo.-9350451497

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–
श्री मन्त्री जी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नयी दिल्ली-110001

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज निरपुड़ा, जिला–बागपत के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

आर्य समाज निरपुड़ा, जिला–बागपत का वार्षिकोत्सव 28 से 30 मार्च, 2019 को आर्य समाज मंदिर में सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी, प्रो. सुरेन्द्र पाल आर्य मवीकला, श्री रिपुदमन आर्य मंत्री जिलासभा, श्री योगेन्द्र आर्य सहारनपुर, प्रिं. भोपाल सिंह छपरौली, श्री सहदेव सिंह बेधड़क, श्री हवा सिंह तूफान, श्री हरि सिंह आर्य एवं सुश्री ललिता आर्या आदि के व्याख्यान एवं भजनों का कार्यक्रम तीन दिन तक चला। यज्ञ का संयोजन श्री अंकित शास्त्री ने किया। इस अवसर पर आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सविता आर्या ने सभी विद्वानों एवं उपदेशकों का सम्मान किया। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बब्बू राणा एवं आर्य समाज के मंत्री श्री राम कुमार आर्य आदि ने अतिथि सत्कार का दायित्व अपने ऊपर लिया।

इस अवसर पर 29 मार्च, 2019 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दोपहर बाद के सत्र में अपने ओजस्वी उद्बोधन द्वारा श्रोताओं को विशेष प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज एक वैचारिक क्रांति तथा आन्दोलन का नाम है। अतः हमें वैदिक विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने के लिए समर्पित भाव से कार्य करना चाहिए। स्वामी जी ने सप्तक्रांति के बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता है जो जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकता मुक्त, नशामुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, पाखण्ड मुक्त, महिला उत्पीड़न मुक्त तथा शोषण मुक्त समाज हो। स्वामी आर्यवेश जी ने गांव की आर्य समाज के प्रधान पद पर सविता आर्या को चुने जाने पर विशेष बधाई एवं साधुवाद दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/– रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।